सतत विकास हेतु समावेशी शिक्षा

डॉ. अमिता जैन
सहायक आचार्य, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ (राज.)

सारांश . समावेशी शिक्षा एक आदर्शात्मक रूप है न कि एक कार्यक्रम इसमें सामान्य शिक्षक को विशिष्ट शिक्षा के योग्य बनाना है। जिसमें शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक भाषागत व मूल्य आदि विभिन्न आवश्यकता वाले बालकों के लिए सामान्य शैक्षिक व्यवस्था लागू करना भी है। भारत सरकार ने शिक्षा के आधारभूत अधिनियम 'शिक्षा सबके लिए' को प्रमुख माना जिसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक बालक तक शिक्षा को पहुँचाना है। समावेशी शिक्षा का प्रमुख संबंध अक्षमता से युक्त छात्रों से हैं, जिन्हें विभिन्न प्रयासों के माध्यम से शिक्षा की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जाता है। इस शिक्षा व्यवस्था में विभिन्न संसाधनों का समन्वित रूप से प्रस्तुतीककरण है। विद्यालय शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 में छब्म्त्ज ने समावेशी शिक्षा पर बल दिया। 1994 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित ैम्छ ैचमबपंस छममक म्कनबंजपवदद्ध एवं यूनेस्को ने भी समावेशी शिक्षा को अपनाने पर बल दिया।

मूल शब्द . समावेशी शिक्षा, विशिष्ट शिक्षा,दिव्यांग, शैक्षिक व्यवस्था,सामान्यबालक

1 प्रस्तावना

शिक्षा के समावेशीकरण के अंतर्गत विशेष शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक सामान्य छात्र और एक दिव्यांग को समान शिक्षा प्राप्ति के अवसर मिलने चाहिए। इसमें एक सामान्य छात्र एक दिव्यांग छात्र के साथ विद्यालय में अधिकतर समय बिताता है। पहले समावेशी शिक्षा की परिकल्पना सिर्फ विशेष छात्रों के लिए की गई थी लेकिन आधुनिक काल में हर शिक्षक को इस सिद्धांत के विस्तृत दृष्टिकोण कोअपनी कक्षा में व्यवहार में लाना चाहिए। समावेशी शिक्षा या एकीकरण के सिद्धांत की ऐतिहासिक जड़ें कनाडा या अमेरिका से जुड़ी है। प्राचीन शिक्षा पद्धति की जगह नई शिक्षा नीति का प्रयोग आधुनिक समय में होने लगा है। समावेशी शिक्षा विशेष विद्यालय या कक्षा को स्वीकार नहीं करता। अशक्त बच्चों को सामान्य बच्चों से अलग करना अब मान्य नहीं है। विकलांग बच्चों को भी सामान्य बच्चों की तरह ही शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है। समावेशी शिक्षा के अंतर्गत सामान्यतः छात्र एक कक्षा में अपनी आयु के हिसाब से रखे जाते हैं चाहे उनका अकादमिक स्तर ऊँचा या नीचा ही क्यों न हो। शिक्षकों द्वारा सामान्य और विकलांग सभी बच्चों से एक जैसा बर्ताव किया जाता है। अशक्त बच्चों की मित्रता अक्सर सामान्य बच्चों के साथ करवायी जाती है ताकि उनमें हीनता की भावना न पनपे और आपस में सहयोग की भावना का विकास हो। सहयोग की भावना विकसित करने हेतु शिक्षकों द्वारा कुछ तरीकों का उपयोग किया जाता है–

- सामुदायिक भावना को बढ़ाने के लिए खेलों का आयोजन।
- विद्यार्थियों को समस्या के समाधान में शामिल करना।
- किताबों और गीतों का आदान–प्रदान।
- संबंधित विचारों का कक्षा में आदान–प्रदान।
- छात्रों में समुदाय की भावना विकसित करने हेतु कार्यक्रम तैयार करना।
- छात्रों को शिक्षक की भूमिका निभाने का अवसर देना।
- विभिन्न क्रियाकलापों के लिए छात्रों का दल बनाना।
- प्रसन्नचित वातावरण का निर्माण करना।
- अभिभावकों का सहयोग लेना।
- विशेष प्रशिक्षित शिक्षकों की सेवा लेना।

2 समावेशी शिक्षा के उद्देश्य

1. शारीरिक दोष युक्त विभिन्न बालकों की पहचान करना।
2. शारीरिक दोष की दशा को बढ़ाने से पहले कि वो गम्भीर स्थिति को प्राप्त हो, उनके रोकथाम के लिए सर्वप्रथम उपाय किया जाना।
3. बालकों के सीखने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नवीन विधियों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना।
4. शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकों का पुनर्वास कराया जाना।
5. शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकोंकी शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना तथा सुधार हेतु संगठन की तैयारी करना।
6. बालकों की असमर्थताओं का पता लगाकर उनको दूर करने का प्रयास करना।

3 समावेशी शिक्षा हेतु रणनीतियाँ

1. समावेशित विद्यालय वातावरण

बालकों की शिक्षा चाहे वह किसी भी स्तर की हो, उसमें विद्याल्य के वातावरण का बहुत योगदान होता है। विद्यालय का वातावरण ही कुछ चीजों की शिक्षा बालकों को स्वयं देता है। समावेशी शिक्षा के लिए आवश्यक है कि विद्यालय का वातावरण सुखद होना चाहिए। इसके अतिरिक्त उपकरण, संसाधन, भवन आदि का समुचित प्रबंध आवश्यक है।

2. सबके लिए विद्यालय

समावेशी शिक्षा की मूल भावना है एक ऐसा विद्यालय जहाँ सभी बालक एक साथ शिक्षा प्राप्त करते हैं। समावेशित शिक्षा के उद्देश्यों को सभी बालकों तक पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय में दाखिले की नीति में परिवर्तन किया जाना चाहिए।

3. बालकों के अनुरूप पाठ्यक्रम

बालकों को शिक्षित करने का सबसे असरदार तरीका है कि उन्हें खेलने के तरीकों तथा गतिविधियों के माध्यम से सिखाने का प्रयास किया जाना चाहिए। समावेशित शिक्षा व्यवस्था के लिए आवश्यक है कि विद्यालय पाठ्यक्रम बालकों की अभिवृत्तियाँ, मनोवृत्तियाँ, आकांक्षाओं तथा क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए ताकि प्रत्येक बालक की क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा रूचि के अनुसार अनुकूल बनाया जा सके।

4. मार्गदर्शन व निर्देशन की व्यवस्था–

समावेशित शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत घर से विद्यालय जाते समय बालक को आरम्भ में नये परिवेश में अपने आपको समायोजित करने में कुछ असुविधा होती है। किशोरावस्था के दौरान होने वाले शारीरिक, मानसिक, सामजिक परिवर्तनों के कठिनाई के दौर में मार्गदर्शन एवं निर्देशन से बालक को इस संक्रमण काल में काफी सफलता मिलती है।

5. सहायक तकनीकी उपकरणों का उपयोग

समावेशित शिक्षा के सफलता के लिए और उसके प्रचार प्रसार के लिए शिक्षा व्यवस्था में तकनीक का उपयोग किये जाने की आवश्यकता है। टी. वी., कार्यक्रमों, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन आदि तकनीकी उपकरणों का उपयोग करके बालकों की शिक्षा, सामाजिक अन्तः क्रिया, मनोरंजन आदि में प्रभावशाली भूमिका निभाई जा सकती है।

6. समुदाय की सक्रिय भागीदारी

समावेशित शिक्षा हेतु आवश्यक है कि विद्यालयों को सामुदायिक जीवन को केन्द्र बनाया जाना चाहिए। इस हेतु समय–समय पर विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम, वाद विवाद, खेलकूद जैसे मनोरंजन कार्यक्रमों का आयोजन कर उनमें बालकों के अभिभावकों और समाज के अन्य सम्मानित व्यक्तियों को बुलाया जाना चाहिए जिससे शिक्षा ग्रहण करने के संबंध में फैली भ्राँतियों को दूर कर उन्हें इन बालकों की योग्यता व प्रतिभा से परिचित करवाया जा सके।

7. शिक्षकों का पर्याप्त प्रशिक्षण

शिक्षक को ही शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति तथा शैक्षिक संस्थानों की आधारशिला माना गया है। समावेशित शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षकों की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है क्योंकि समावेशित शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक केवल अपने आपको ही शिक्षण कार्य तक सीमित नहीं रखता है, अपितु विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बालकों का कक्षा में उचित ढंग से समायोजित करना, उनके लिए विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक सामग्री का निर्माण करना आदि कार्य भी करने पड़ते है। इसलिए अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पूर्णतः निपुण हो, उसे विशिष्ट सामग्री की जानकारी हो, बालकों के प्रति स्वस्थ व सकारात्मक अभिवृत्तियाँ रखता हो आदि।

4 सतत विकास हेतु अभिवृत्ति व सकारात्मक व्यवहार

- शिक्षकों का बालकों के प्रति प्यार व व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिये तथा शिक्षक बालकों को अभिप्रेरित करके उनमें आत्मविश्वास पैदा करे ताकि उनमें सकारात्मक अभिवृत्ति जाग्रत हो।
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों में सामान्य बालकों की तुलना में स्मरण शक्ति काफी कम होती है। अतः इनको प्रेरित करके बार–बार अभ्यास करवाना चाहिए तथा अच्छे कार्य के लिए इनाम आदि देकर उनको प्रेरित करना चाहिए जिससे उनमें सकारात्मक व्यवहार उत्पन्न हो।
- ऐसे बालकों के लिए शिक्षक को उनका मनोबल बढ़ाने के लिए महापुरूषों की कहानियाँ सुनाकर प्रेरित करना चाहिए।
- शिक्षक को चाहिए कि वह इन बालकों को विद्यालय की अन्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करें ताकि उनमें आत्मविश्वास पैदा हो।
- विद्यालय या समाज के अंदर उनके लिए क्लब का प्रबन्ध करना चाहिए ताकि वे रोज अपनी शारीरिक योग्यता के अनुसार खेल सके।
- बालकों के लिए कक्षा का वातावरण तनाव रहित होना चाहिए जिससे आत्मविश्वास उत्पन्न हो एवं सकारात्मक व्यवहार कर सके।

5 समावेशी शिक्षा एक कार्यक्रम नहीं बल्कि विचारात्मक/आदर्शात्मक सिद्धांत

समावेशी शिक्षा को एक कार्यक्रम के रूप में नहीं बल्कि एक आदर्शात्मक सिद्धांत के रूप में माना है। वास्तव में सभी बालकों की विभिन्नता के साथ शिक्षा देने में समावेशी शिक्षा की विद्यालय में महती भूमिका है। समावेशी शिक्षा का तात्पर्य विद्यालय में बालकों की आवश्यकता के अनुसार सभी आयामों पर शिक्षित करना, न कि उनके बीच जाति, लिंग, धर्म, विभिन्नता के आधार पर शिक्षित करना। यदि समावेशन सफल बनाना है तो निम्न कारकों को ध्यान रखना होगा–

- शिक्षक को सामान्य शिक्षा व्यवस्था में विशेष आवश्यकता वाले बालकों के उत्तरदायित्व को स्वीकार करना होगा।
- सामान्य विद्यालयों में विशेष आवश्यकता वाले बालकों के विकास हेतु समुदाय को भी प्रोत्साहित किया जाये।

- सामान्य कक्षाकक्ष के शिक्षक को इन बालकों की शिक्षा की सामान्य जानकारी हो।
- सामान्य विद्यालयों में सभी प्रकार की आवश्यकता वाले बालकों को प्रवेश मिले।
- इन विद्यालयों में बालकों की विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर शिक्षण व्यवस्था हो।

6 निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि समावेशी शिक्षा न केवल आधारभूत अधिकार है बल्कि समाज के उन लोगों को इस योग्य बनाना जिन्हें इसकी आवश्यकता है। समावेशी शिक्षा ने बालकों के विकास से सम्बन्धित सभी क्षेत्रों में जैसे– चिकित्सा, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्र और सामाजिक कार्य सभी को आकर्षित किया है। विभिन्न विश्वविद्यालयों, विभागों तथा शिक्षा संस्थाओं में समावेशी शिक्षा के स्नातक, स्नातकोत्तर तथा प्रशिक्षित स्नातक पाठ्यक्रमों का आरम्भ होना इस तथ्य का परिचायक है। समावेशी शिक्षा हेतु जो रणनीतियाँ बनाई गई हैं उन पर अमल करना चाहिए और सतत् विकास हेतु अभिवृत्ति और सकारात्मक व्यवहार को अपनाना चाहिए। समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं वाले बालकों को एक समतामूलक शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान करना है। यह शिक्षा समाज के सभी बालकों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने का समर्थन करती है। समावेशी शिक्षा को एक कार्यक्रम के रूप में न स्वीकार कर एक आदर्शात्मक/विचारात्मक सिद्धांत के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भार्गव, महेश (2012), विशिष्ट बालक : शिक्षा एवं पुनर्वास, एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
2. भार्गव, महेश एण्ड लवानियां, भावना (1982), विशिष्ट बालक, भार्गव बुक हाउस, आगरा।
3. शर्मा, आर. के. (2015), समावेशी शिक्षा, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
4. ठाकुर यतीन्द्र (2017), समावेशी शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
5. उदय, दीपक, उदय आभा (2015),समावेशी विद्यालय की संरचना, अलका पब्लिकेशन्स अजमेर।
6. National Council of educational Research and Training, Promoting inclusion of children with special meals through educat programme.